"उड़ने से पहले, पंख होना आवश्यक है"

वर्त्तमान काल का युग आधुनिक युग कहलाता है , क्युकी आज हमारे पास लगभग सभी साधन उपलब्ध हैं, जिनकी वजह से हम अपने कार्य को आसानी व समाये से पहले कर लेते हैं , जो क हमारे लए बहुत महत्पूर्ण साबित हुआ है , ये करने के लए उसको कोई भी कदम उठाना पड़ेगा या कसी की भी नक़ल करनी पड़ेगी यैसी ही हिंदी में एक कहावत है "उड़ने से पहले , पंख होना आवश्यक है" यह कहावत बहुत सही साबित होती है क जब हम कसी कार्य को करें तो उस कार्य का प्राथ मक ज्ञान होना चाहिए , यदि हमारे पास उस कार्य का ज्ञान नहीं होगा तो भ वष्य में हम उस कार्य को करने में असफल हो जायेंगे.

जैसे क अगर कोई बच्चा भारतीय क्रकेट टीम में सम्लित होना चाहता है तो उसे अभी से क्रकेट क सभी बारीक़ चीजों का ज्ञान और अभ्यास होना अति आवश्यक है, यदि कोई खलाडी अभ्यास काम करता है तो उसके खेल पैर उसका असर पड़ता है जो क उसके भ वष्य के लए उपयोगी नहीं है , यदि कोई बालक तैराकी सीखने से पहले नदी में तैरने क दूसरे तैराको को देखखर नदी में तैरने के लए नहीं जाना चाहिए.

हमारे देख में कई महापुरुष है जो अपनी ववेक शक्ति दृण इक्छा व कार्य करने करने क श्रमता व तत्पस्ता के कारण सफल हुए हैं , जैसे क स्वामी ववेकानंद जी ने इस वषय पर कहा था क "नक़ल करने वालो को असफलता प्राप्त हुई हैं , नक़ल करने वालों को उतना नहीं मलता जितना उनकी क्षमता , दृण इक्छा उनको दे सकती हैं".

स्वामी ववेकानंद जी का यह भी कहना हैं क अगर हम दूसरों को नक़ल करते हैं तो हम अपने सपनो का ब लदान कर रहे हैं जो क कसी भी मनुष्य के भ वष्य के लए सही नहीं हैं इस लए हमें कसी क भी नक़ल नहीं करनी चाहिए अर्थात हमे अपना रास्ता स्वयं बनाना चाहिए.

मैं अपनी वाणी यह कहकर समाप्त करना चाहूंगा क सभी को एक जीवन मला हैं उसे कसी और पर निर्भर होकर अपने जीवन के लक्ष्य को खोना बही छाए और उसकी प्राप्ति के लए उसके दिखाए मार्ग पर न चलकर स्वयं का मार्ग को सबसे अच्छा समझ सकते हैं और कोई नहीं.

-----धन्यवाद-----

वश्वास अग्रवाल

6-A